कुछ रंग इधर उधर के

– मोहन चुटानी

1. चेरी ब्लोसम की बहार

हानामी का खुमार
साकुरा के प्यारे रंग

2. गर्मियों की उमस

सिकाडा की तड़प
फुहार का इंतज़ार

3. फूजी सान की चढ़ाई
तना हुआ सीना,
श्वेत बादलों की झालर में उलझा सा

4. मात्सूरी के मेले

किमोनो में सजी किशोरियां
हाथ में पंखे हिलाती, इतराती हुईं

5. पतझड़ के लाल पीले रंग

ठूंठ वीरानगी के जश्न
बर्फानी हवाओं को, गिर के सलाम

6. सर्द बर्फ हवाएं
धरती सोती श्वेत चादर तान करू
सूर्य की किरणे भी ठंडी सी लगतीं

कुछ मैं कहूँ कुछ तुम कहो

– सुनीता पंघाल

ना मैं तुम्हें हूँ जानती, ना तुम्हें मेरी पहचान है
पर बात बनती जाएगी
कुछ मैं कहूँ कुछ तुम कहो
ज़िन्दगी के रास्ते, लम्बे भी हैं मुश्किल भी हैं
अकेले थक भी जाऊँ, शायद डर भी जाऊँ मैं
पर रास्ते कट जाएँगे
कुछ मैं चलूँ कुछ तुम चलो

दुनिया में हैं लाखों गम
रोने से हासिल हो क्या
हर दर्द भी मिट जाएगा
कुछ मैं हसूँ कुछ तुम हसों
हर बात बनती जाएगी
कुछ मैं कहूँ कुछ तुम कहो।